क्योंकि तुम परमेश्वर की नहीं, मनुष्यों की बातें सोचते हो

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 1

हमारे प्रभु और उद्धारकर्ता यीशु मसीह के नाम की स्तुति हो। जीवन के वचनों पर मनन करने में आपका स्वागत है।

हर वह आवाज़ जो तुम्हें दिलासा देती है, उसका उद्देश्य सचमुच दिलासा देना नहीं होता… और हर वह आवाज़ जो तुम्हें आशा देती है, उसका अंत वास्तव में आशा में नहीं होता।
आइए हम अपने प्रभु यीशु मसीह से सीखें कि उन्होंने आत्माओं को कैसे परखा।

मत्ती 16:21-23
“उस समय से यीशु ने अपने चेलों को दिखाना आरम्भ किया कि उसे अवश्य है कि वह यरूशलेम जाए और पुरनियों, महायाजकों और शास्त्रियों के हाथ से बहुत दुख उठाए, और मार डाला जाए, और तीसरे दिन जी उठे।
तब पतरस ने उसे अलग ले जाकर उलाहना देना आरम्भ किया, कि हे प्रभु, परमेश्वर न करे! यह तुझ पर कभी न आने पाए।
उसने फिरकर पतरस से कहा, ‘हे शैतान, मेरे सामने से दूर हो जा! तू मेरे लिए ठोकर का कारण है; क्योंकि तू परमेश्वर की नहीं, पर मनुष्यों की बातें सोचता है।’”

क्योंकि तुम परमेश्वर की नहीं, मनुष्यों की बातें सोचते हो

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 2

आइए इस वचन पर ध्यान दें: “क्योंकि तुम परमेश्वर की नहीं, मनुष्यों की बातें सोचते हो।”
इसका अर्थ यह है कि शैतान के विचार हमेशा सीधे दुष्ट आत्माओं से नहीं आते, बल्कि मनुष्यों के विचारों के माध्यम से भी आते हैं।

शैतान यह देखता है कि मनुष्य क्या चाहता है, किस चीज़ को पसंद करता है, और उन्हीं इच्छाओं के द्वारा वह मनुष्य को प्रारंभिक स्तर पर गिराता है।

वह जानता है कि मनुष्य “दिलासा और उत्साह” चाहता है। इसलिए वह उसी रूप में प्रभु यीशु के पास आया—उसे यह कहकर दिलासा देने के लिए कि “तुझे कष्ट नहीं होगा, तू क्रूस पर नहीं जाएगा।” क्योंकि वह जानता था कि यही मनुष्य की स्वाभाविक सोच है—आराम, प्रोत्साहन और सहज जीवन की खोज।

लेकिन क्योंकि यीशु मसीह “दृढ़ चट्टान” हैं, और वे हर व्यक्ति के विचारों को पहले से जानते हैं, उन्होंने तुरंत पतरस के भीतर शैतान को पहचान लिया और उसे डाँट दिया।

आज भी शैतान यही सिद्धांत अपनाता है—वह बदला नहीं है।
वह मनुष्यों के विचारों को पढ़ता है, जानता है कि वे क्या चाहते हैं। वह जानता है कि मनुष्य उत्साह पसंद करते हैं, डाँट-फटकार पसंद नहीं करते, निराश होना नहीं चाहते।

क्योंकि तुम परमेश्वर की नहीं, मनुष्यों की बातें सोचते हो

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 3

इसलिए यदि वह किसी को वास्तव में गिराना चाहता है, तो वह पहले उसे झूठा दिलासा देता है, ताकि बाद में उसे पूरी तरह तोड़ सके और वह फिर कभी खड़ा न हो सके।
वह पहले उत्साहित करता है—जैसा उसने प्रभु यीशु के साथ करने की कोशिश की, पर वह असफल रहा।

बाइबल कहती है कि हमें “उद्धार पाना चाहिए”,
लेकिन शैतान कहेगा, “अभी समय है, पहले जीवन बना लो।”

बाइबल कहती है कि हमें “प्रार्थना करने वाले होना चाहिए”,
लेकिन शैतान कहेगा, “तुम बहुत व्यस्त हो, काम से थक जाते
हो।”

बाइबल कहती है कि हमें “हर रविवार और सप्ताह के बीच में भी कलीसिया में जाना चाहिए” (इब्रानियों 10:25),
लेकिन शैतान कहेगा, “काम बहुत है, परमेश्वर समझ जाएगा।” यह दिलासा जैसा लगता है, पर अंत में गहरा दुःख लाता है।

क्योंकि तुम परमेश्वर की नहीं, मनुष्यों की बातें सोचते हो

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 4

बाइबल कहती है कि हमें “परमेश्वर की सेवा करनी चाहिए” (यूहन्ना 9:4),
लेकिन शैतान कहेगा, “अभी समय है, दूसरे लोग तुम्हारे लिए प्रार्थना कर रहे हैं।”

बाइबल कहती है कि “हमें अपने आप का इन्कार करके अपना क्रूस उठाना चाहिए”,
लेकिन शैतान कहेगा, “डरो मत, एक दिन कर लोगे… अभी ऐसे ही
रहो, कोई भी पूरी तरह पवित्र नहीं है।”

बाइबल कहती है, “व्यभिचार मत करो, क्योंकि उसका परिणाम
मृत्यु है”,
लेकिन शैतान कहेगा, “कुछ नहीं होगा, बहुत लोग करते हैं और
अभी भी जी रहे हैं।”

ये सब शैतान के विचार हैं, जो मनुष्य के विचारों के समान प्रतीत होते हैं।

क्योंकि तुम परमेश्वर की नहीं, मनुष्यों की बातें सोचते हो

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 5

इसलिए हमें सावधान रहना चाहिए।
हर वह आवाज़ या विचार जो दिलासा और आशा के साथ आता है, वह परमेश्वर से नहीं होता।

जाँचो और परखो—क्या यह विचार परमेश्वर के वचन के साथ मेल खाता है?
यदि यह परमेश्वर के वचन के विरुद्ध है, तो चाहे वह कितना भी सुखद क्यों न लगे, उसे मत सुनो।

बल्कि कहो:

“हे शैतान, मेरे सामने से दूर हो जा! क्योंकि तू परमेश्वर की नहीं, मनुष्यों की बातें सोचता है।”

प्रभु हमारी सहायता करे। �

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP….

Share on:
WhatsApp